Amire Ahle Sunnat Se Miyan Bivi Ke
Baare Mein Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 232
Weekly Booklet : 232

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ के मल्फ़ूज़ात का त़हरीरी गुलदस्ता

अमीरे अहले सुन्नत से

मियां बीवी

के बारे में सुवाल जवाब

सफ़ह़ात 21

- क्या मियां बीवी जन्नत में यक्जा होंगे ? 02
- घर में झगड़े ख़त्म करने के त़रीक़े 08
- शौहर को गाली देना कैसा ? 10
- शौहर ख़र्चा न दे तो बीवी क्या करे ? 13

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	: **अमीरे अहले सुन्नत से मियां बीवी के बारे में सुवाल जवाब**
पहली बार	: जुमादल आख़िर **1443** हि., जनवरी **2022** ई.
ता'दाद	: 000
नाशिर	: **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **''अमीरे अहले सुन्नत से मियां बीवी के बारे में सुवाल जवाब''**

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अमीरे अहले सुन्नत से मियां बीवी के बारे में सुवाल जवाब

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

जिसे कोई मुश्किल पेश आए उसे मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ना चाहिये क्यूं कि मुझ पर दुरूद पढ़ना मुसीबतों और बलाओं को टालने वाला है।

(القول البدیع، ص414، بستان الواعظین ص274)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नेक बीवी का वाक़िआ

सुवाल : नेक बीवी का कोई वाक़िआ सुना दीजिये।

जवाब : ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه सह़ाबिये रसूल थे, एक बार आप को ह़ज़्रमौत से सात लाख दिरहम मौसूल हुए तो रात भर बेचैन रहे, आप की ज़ौजा ने पूछा : आप को क्या हुवा है ? फ़रमाया : मैं रात से फ़िक्र मन्द हूं कि वोह शख़्स अपने रब की बारगाह में कैसे ह़ाज़िर होगा जो इस ह़ाल में रात गुज़ार रहा हो कि उस के घर में येह माल मौजूद हो। सआ़दत मन्द बीवी ने अ़र्ज़ की : इस में परेशानी की क्या बात है ? आप अपने नादार दोस्तों को क्यूं भूल रहे हैं ? सुब्ह़ होते ही उन्हें बुला कर येह सारा माल उन में तक़्सीम कर दीजिये। नेक बख़्त बीवी की येह तज्वीज़ सुन कर आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ख़ुश हो गए और फ़रमाया : **अल्लाह** पाक आप पर रह़्म फ़रमाए, आप वाक़ेई नेक बाप की नेक बेटी हैं। चुनान्चे सुब्ह़ होते ही आप

رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मुहाजिरीन व अन्सार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में सारा माल तक़्सीम करना शुरूअ़ कर दिया।[1]

अल्लाहु अक्बर ! हमारे सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सख़ावतें ऐसी थीं। हमारे पास पैसे आ जाएं तो ख़ुशी के मारे बेचैन हो जाएं जब कि इन ह़ज़रात के पास जब दौलत आती तो सदमे के मारे इन की ह़ालत मुज़्त़रिब हो जाती कि येह दौलत कहां से आ टपकी ? अब मैं इस का क्या करूं ? ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की तो बात ही कुछ और है और इन की ज़ौजए मोह़तरमा भी مَاشَآءَاللّٰہ कैसी नेक औ़रत थीं। वोह दौर ही नेकों का दौर था। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 20)

हर सह़ाबिये नबी..... जन्नती जन्नती

सब सह़ाबियात भी..... जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

क्या मियां बीवी जन्नत में यक्जा होंगे ?

सुवाल : क्या मियां बीवी दोनों जन्नत में एक साथ रहेंगे ?

जवाब : जी हां ! अगर मियां बीवी का ख़ातिमा ईमान पर हुवा तो येह दोनों जन्नत में साथ रहेंगे। (التذکرۃ باحوال الموتی وامور الاخرۃ، ص462) अगर उन में से किसी का مَعَاذَاللّٰہ ईमान सलामत न रहा तो दोज़ख़ उस का ठिकाना होगा और जो जन्नत में जाएगा उस का किसी दूसरे जन्नती से निकाह़ हो जाएगा।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 8)

अपनी ज़ौजा से अच्छा सुलूक कीजिये

सुवाल : अगर शौहर अपनी बीवी के साथ नरमी करता है तो लोग कहते हैं तुम "ज़न मुरीद" बन गए हो, इस का क्या ह़ल है ?

1... ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की इन ज़ौजए मोह़तरमा का नाम ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا है, जो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की बेटी थीं। (سیر اعلام النبلاء، 3/19، رقم:7ملتقطا)

जवाब : अगर कोई शख़्स ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइस अपनी ज़ौजा से ख़ुश अख़्लाक़ी के साथ पेश आता है या उस से नर्म बरताव करता है और लोग उसे "ज़न मुरीद" होने का ता'ना देते हैं तो यक़ीनन येह उस की दिल आज़ारी का सबब होगा। लेकिन शौहर को चाहिये कि अपनी ज़ौजा के साथ हुस्ने सुलूक जारी रखे लोगों के कुछ भी कहने पर दिल बरदाश्ता न हो और हरगिज़ अपने रवय्ये में तब्दीली न लाए बल्कि मज़ीद नरमी के साथ पेश आए। फ़ी ज़माना लोगों के अन्दाज़ यक्सर बदल चुके हैं ख़ुसुसन अपनी ज़ौजा के साथ इन का रवय्या इन्तिहाई ना गुफ़्ता बेह होता जा रहा है। इस के बा वुजूद येह लोग अपनी ज़ौजा से मुआ़फ़ी मांगना अपनी कस्रे शान समझते हैं, ह़ालां कि बीवी पर ज़ुल्म किया हो तो मुआ़फ़ी मांगना वाजिब है। उन्हें चाहिये कि अपनी ज़ौजा से मुआ़फ़ी तलाफ़ी करते रहा करें। येह ज़रूरी नहीं कि ज़ुल्म किया होगा तो ही मुआ़फ़ी मांगी जाएगी बल्कि एह़तियाती मुआ़फ़ी मांग ली जाए तब भी ह़रज नहीं बल्कि एह़तियाती मुआ़फ़ी मांगना मियां बीवी के दरमियान मह़ब्बत में इज़ाफ़े का सबब है। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! मेरा मा'मूल है मैं एह़तियाती मुआ़फ़ी मांगता रहता हूं जैसे कोई बड़ी रात या बड़ा दिन आता है तो मैं मुआ़फ़ी तलाफ़ी की तरकीब बना लेता हूं इस से हरगिज़ किसी की शान में कमी नहीं आती और न ही किसी की इ़ज़्ज़त कम होती है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 11)

सुवाल : क्या बीवी शौहर की जूठी चाय पी सकती है ?

जवाब : दोनों एक दूसरे का जूठा पी सकते हैं।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 26)

सुवाल : आज कल घरों में इन्टरनेट, सोशल मीडिया के बहुत ज़ियादा इस्ति'माल की वज्ह से मियां बीवी में त़रह़ त़रह़ के मसाइल बल्कि त़लाक़ तक हो जाने की इत्तिलाआ़त हैं, कोई ह़ल इर्शाद फ़रमा दीजिये। (निगराने शूरा के सुवाल का ख़ुलासा)

जवाब : इन्टरनेट के बे जा इस्ति'माल में अपनी और घर की बरबादी है लिहाज़ा घर चलाने के लिये मियां बीवी को इस के ज़ियादा इस्ति'माल से बचना होगा। अगर बीवी नेट इस्ति'माल कर रही हो और उसी वक़्त उसे शौहर कहे कि मुझे चाय बना कर दे दो तो उसे चाहिये कि लब्बैक कहती हुई उठे और हाथों हाथ चाय बना कर पेश कर दे, अगर उस वक़्त नहीं उठेगी तो घर कैसे चलेगा ? बीवी को शौहर की इताअ़त करनी चाहिये। अगर बीवी शौहर की इताअ़त नहीं करेगी तो आपस में मुंहमारी होती रहेगी। औ़रत सामने से जवाब देगी तो फिर दुन्या की बरबादी के साथ आख़िरत की तबाहकारी भी होगी। हर फ़रीक़ सामने वाले की ग़लतियां साबित करने की कोशिश करेगा। झूट, ग़ीबत, तोहमत और दीगर गुनाहों के दरवाज़े खुलेंगे मसलन बीवी कहेगी कि मुझे मारपीट कर के ज़ुल्म करता है, खाना और ख़र्ची नहीं देता। जवाब में शौहर की त़रफ़ से भी इल्ज़ामात की बोछाड़ होगी और इस जंग का नतीजा مَعَاذَاللہ त़लाक़ या जुदाई पर होगा। बस **अल्लाह** पाक मुसल्मानों पर रह़्म फ़रमाए। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 35)

सुवाल : बा'ज़ लोग मियां बीवी के दरमियान जुदाई डलवाने के लिये अ़मलिय्यात करवाते हैं अगर बीवी पर उस जादू के असरात हों जिस के बाइ़स शौहर के घर आने पर उस का सांस बन्द होने लगे तो इस मस्अले का क्या ह़ल किया जाए ?

जवाब : अ़मलिय्यात करने वाले मियां बीवी में जुदाई डलवाने के लिये भी अ़मलिय्यात करते हैं मगर येह बात साबित किस त़रह़ होगी कि किसी ने उस पर कुछ करवाया है या फ़ुलां रिश्तेदार ने करवाया है ? बा'ज़ आ़मिल जादू करवाने वाले के बारे में कुछ इशारा दे देते हैं या उस के नाम का पहला ह़र्फ़ बता देते हैं, अब अगर इत्तिफ़ाक़ से किसी रिश्तेदार का नाम उसी ह़र्फ़

से शुरूअ़ होता हो तो उस के बारे में बद गुमानी की जाती है कि येही जादू करवाने वाला है ह़ालां कि उस बेचारे को पता भी नहीं होता तो यूं आ़मिल आपस में लड़वा देते हैं। शौहर के घर बीवी की सांस रुकती है तो जब तक शर्ई़ सुबूत न हो किसी के बारे में येह कहना मुश्किल है कि फ़ुलां रिश्तेदार अ़मल करवा कर जुदाई डलवा रहा है। बाबा जी का कह देना शर्ई़ सुबूत नहीं कहलाता। बीवी जब भी शौहर के घर जाती है बेचारी का सांस रुकने लगता है तो इस की कोई भी वज्ह हो सकती है। नफ़्सियाती असर भी हो सकता है जब कि ज़ेह्न में येह बात बैठ गई हो कि शौहर के घर जाऊंगी तो मेरा सांस रुकेगा क्यूं कि फ़ुलां दिन भी सांस रुक गया था ह़ालां कि एक बार ऐसा हो जाना बार बार ऐसा होने की दलील नहीं। मुम्किन है उस दिन कहीं से सीढ़ियां चढ़ कर थकी हारी शौहर के घर गई हो जिस की वज्ह से सांस फूल गया हो और इत्तिफ़ाक़ से रुकने लगा हो तो इस वाक़िए़ को दलील बना कर येह कह रही है कि शौहर के घर मेरा सांस रुकता है। याद रखिये ! नफ़्सियाती असर के बड़े असरात होते हैं और बन्दे को ऐसा लगता है कि इस के साथ यूं होता है ह़ालां कि ह़क़ीक़त में ऐसा नहीं होता।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 52)

सुवाल : अगर औ़रत अपने शौहर से पांच या छे माह अलग रहती हो तो क्या इस से निकाह़ पर कोई फ़र्क़ पड़ेगा ? नीज़ अगर शौहर की रिज़ा के बिग़ैर अलग रहती हो तो क्या हुक्म है ?

जवाब : औ़रत अपने शौहर से अलग रहती हो तो इस से निकाह़ पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। नीज़ अगर औ़रत शौहर की रिज़ा के बिग़ैर अलग रहती हो तब भी निकाह़ नहीं टूटेगा अलबत्ता गुनाहगार होना अलग बात है। अगर शौहर ज़ुल्म करता है इस वज्ह से अलग रहती है तो फिर दारुल इफ़्ता अहले

सुन्नत से रुजूअ़ करना चाहिये ताकि सूरते ह़ाल बता कर तै़ हो कि वोह क्यूं शौहर से अलग रह रही है ? मगर इस से निकाह़ नहीं टूटेगा।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 65)

सुवाल : क्या बीवी शौहर से पहले बैअ़त हो सकती है ?

जवाब : जी हां हो सकती है इस में कोई ह़रज नहीं।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 65)

सुवाल : मियां बीवी के दरमियान नाचाक़ी, ना इत्तिफ़ाक़ी और लड़ाई झगड़ा हो जाए तो इस का क्या ह़ल है ? (SMS के ज़रीए़ सुवाल)

जवाब : ताली दो हाथ से बजती है, अगर मियां को कहें कि तुम मुआ़फ़ी मांगो तो वोह कहेगा कि मैं क्यूं मुआ़फ़ी मांगूं ? येह मुंहफट है। अगर बीवी से कहें कि तुम मुआ़फ़ी मांगो तो वोह बोलेगी कि मैं क्यूं मांगूं ? इस ने मुझे ऐसा बोला था। इस लिये अगर दोनों थोड़ा थोड़ा झुक जाएं तो मस्अला ह़ल हो जाएगा। अलबत्ता सह़ीह़ बात येह है कि क़ुरआने करीम में है : ﴿اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ﴾ (پ5، النساء:34) **"तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** मर्द अफ़्सर हैं औ़रतों पर।" तो मर्द औ़रत पर ह़ाकिम है, इस लिये औ़रत मर्द की इत़ाअ़त करेगी, मर्द औ़रत की इत़ाअ़त नहीं करेगा, लेकिन इस का मत़लब येह नहीं है कि मर्द ज़ुल्म करता, मारधाड़ करता और झाड़ता रहे, ऐसा नहीं चलेगा, अगर मर्द ज़ुल्म करेगा तो उसे औ़रत से मुआ़फ़ी मांगनी पड़ेगी, अगर अड़ी करेगा कि "मैं औ़रत से मुआ़फ़ी मांगूं ? बीवी से मुआ़फ़ी मांगूं ? मैं मांगूं ? लोग क्या कहेंगे ?" तो याद रहे कि अगर आख़िरत में **अल्लाह** पाक ने फ़रमा दिया कि इसे जहन्नम में ले जाओ, तो फिर क्या करेंगे ? इसी त़रह़ अगर औ़रत ज़बान दराज़ी करेगी, बोलती चली जाएगी, ज़बान निकालती रहेगी और बरतनों की तोड़फोड़ मचाएगी तो

फिर उसे मुआ़फ़ी मांगनी होगी। जिस ने भी ज़ुल्म किया हो उसे मुआ़फ़ी के साथ साथ तौबा भी करनी होगी। आ़म तौ़र पर ज़ेह्नी हम आहंगी का फ़ुक़्दान होता है जो बरसों तक चलता है, फिर एक दूसरे की पहचान हो जाती है, बच्चे वग़ैरा हो जाते हैं तब उ़मूमन झगड़े वग़ैरा कम हो जाते हैं। बहर ह़ाल ! लड़ना नहीं चाहिये, गुजराती की कहावत है : "नम्यो ते **अल्लाह** ने गम्यो" या'नी जो झुकता है वोह **अल्लाह** को पसन्द आता है। क़ुसूर न भी हो तो मुस्कुरा कर मुआ़फ़ी मांग लेनी चाहिये। मुआ़फ़ी मांगने में भी बा'ज़ अवक़ात अन्दाज़ अड़ी वाला होता है कि "ऐ ! मुआ़फ़ करती है कि नहीं ? कितनी बार मुआ़फ़ी मांगूं ? पाउं पड़ूं तेरे ? नहीं पड़ूंगा, मुआ़फ़ करती है तो कर, नहीं तो जा अपनी मां के पास" येह मुआ़फ़ी का त़रीक़ा नहीं है, अगर भूल हो जाए तो आ़जिज़ी, इन्किसारी, ख़ुशदिली और अच्छे ज़ेह्न से मुआ़फ़ी मांगनी चाहिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم दिल साफ़ हो जाएगा। हंस बोल कर ज़िन्दगी गुज़ारेंगे तो सिह्ह़त भी अच्छी रहेगी, घर भी आबाद होगा और बच्चों की तरबियत भी अच्छी होगी। वरना अगर आए दिन जंगे अ़ज़ीम छिड़ती रही और बोला बोली होती रही तो बच्चे भी बोला बोली देख कर मारा मारी सीख जाएंगे। इस लिये बच्चों पर भी रह़्म किया जाए। लड़ाई लड़ाई मुआ़फ़ करो, अपना दिल साफ़ करो और मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो। मुआ़फ़ करना प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत है। (مسلم، ص1071، حدیث:6592) आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने ख़ून के प्यासों को भी फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर मुआ़फ़ी अ़त़ा फ़रमा दी थी। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/93) क़ुरआने करीम में भी **अल्लाह** पाक ने आप से फ़रमाया है : ﴿خُذِ الْعَفْوَ﴾ (پ9، الاعراف:199) "**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मह़बूब ! मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो।" हमेशा याद रखें कि जब भी मुआ़फ़ी मांगने का

मौक़अ़ आएगा तो आप के सामने शैत़ान आएगा कि "तू ने मुआ़फ़ी मांगी तो सामने वाला सर पर चढ़ जाएगा कि देखा ! क़ुसूर किया था जभी तो मुआ़फ़ी मांगी, मैं हूं ही मज़्लूम और बे क़ुसूर" इस त़रह़ के वस्वसे आएंगे, लेकिन आप ने शैत़ान को भगाना है, क्यूं कि मुआ़फ़ी मांगने से इ़ज़्ज़त कम नहीं होती बल्कि बढ़ती है। मेरा मश्वरा है कि जब एक पार्टी मुआ़फ़ी मांगे तो दूसरी भी मुआ़फ़ी मांग ले, बल्कि दूसरी पार्टी पहली वाली पार्टी से ज़ियादा मुआ़फ़ी मांगे, अगर पहली वाली ने हाथ जोड़ कर मुआ़फ़ी मांगी है तो दूसरी वाली पाउं छू कर मुआ़फ़ी मांग ले। اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم अच्छी त़रह़ दिल साफ़ हो जाएगा। **अल्लाह** करीम हमारे घरों को अम्न का गहवारा बनाए। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 72)

सुवाल : घर में झगड़े ख़त्म करने और ख़ुश गवार महब्बत भरा माह़ोल बनाने के लिये मियां बीवी क्या कर सकते हैं ?

जवाब : एक दूसरे के सामने मुस्कुराते रहें, कभी मुंह न फुलाएं। जब भी शौहर घर आए, बीवी भाग कर दरवाज़ा खोले और मुस्कुरा कर "मरह़बा" या "Welcome" कहे। फिर पूछे कि पानी लाऊं ? चाय लाऊं ? अगर वोह ग़ुस्से में भरा हुवा घर आया था तो इस त़रह़ की Offer (पेशकश) से ग़ुस्सा ठन्डा हो जाएगा। शौहर को चाहिये कि कभी अपने हाथ से भी कोई काम कर लिया करे, जैसे एकआध पियाला धो दिया, पानी ख़ुद उठ कर भर लिया वग़ैरा। ऐसा करने से शौहर छोटे बाप का नहीं होगा बल्कि बीवी की नज़र में इ़ज़्ज़त और बढ़ेगी और वोह भागेगी कि आप रहने दें, मैं कर देती हूं। इस बारे में मेरा अपना ज़ाती तजरिबा है, हमारे घर में اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! झगड़े नहीं होते, लेकिन बा वुजूद इस के कि मेरी Physical condition

(जिस्मानी ह़ालत) अब ऐसी नहीं रही और कुरसी से उठ कर किसी चीज़ को उठाना, या रखना मेरे लिये मुश्किल होता है, फिर भी जब खाना आता है तो मैं अक्सर उठा लेता हूं, वोह कहती है कि ''रहने दीजिये, मैं उठा रही हूं, मैं उठा कर ले आती हूं'' वग़ैरा। वोह बेचारी कोताही नहीं करती लेकिन मेरे इस अन्दाज़ से दिल में ख़ुशी दाख़िल होती है और मह़ब्बत का रिश्ता मज़बूत़ होता है। अगर मैं Order करता रहूं कि ''येह उठा लो, येह कर लो'' तो वोह कर तो लेगी लेकिन ऐसा करने में मुझे मज़ा नहीं आता। मुझे अगर किसी को कोई काग़ज़ देना हो तो बजाए हुक्म देने के कि ''आ कर काग़ज़ ले जाओ'' अक्सर मैं ख़ुद ही उठ कर दे आता हूं कि वोह बेचारा काम में लगा हुवा होगा, मैं उस को बुलाऊं, वोह अपना काम छोड़ कर आए, इस से बेहतर है कि मैं ही उठ कर दे आऊं। ऐसा करने से अगर मेरी शान में फ़र्क़ आता होता तो येह लाखों मुझ से मह़ब्बत करने वाले न होते। ''दाना ख़ाक में मिल कर गुले गुलज़ार होता है।'' (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 76)

सुवाल : शौहर का रात देर तक लाइट जला कर मुत़ालआ़ करना कैसा है ?

जवाब : मियां को मुत़ालए़ का शौक़ है येह लाइट जला कर मुत़ालआ़ कर रहा है और बेचारी बीवी को सख़्त नींद आ रही है लेकिन उस रोशनी की वज्ह से वोह सो नहीं पा रही और दांत पीस कर पड़ी है कि अगर मियां को बोलूंगी तो लड़ाई हो जाएगी और बा'ज़ अवक़ात लड़ाई हो भी जाती होगी तो ऐसा करना हरगिज़ मुनासिब नहीं है। याद रखिये ! किसी भी कमज़ोर या मा तह़त पर ज़ुल्म करने की इजाज़त नहीं है अगर्चे वोह ह़ाकिम ही क्यूं न हो। दूसरों को तक्लीफ़ दे कर अपनी आख़िरत दाउ पर लगाने के बजाए ऐसी जगह मुत़ालआ़ करें जहां किसी को तक्लीफ़ न हो।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 77)

सुवाल : बीवी अपने शौहर को कहे कि मैं ज़ियादा पढ़ी लिखी हूं और तुम मुझ से कम पढ़े लिखे हो, क्या इस त़रह़ कह कर वोह उस की तज़्लील कर सकती है ?

जवाब : तौबा, اَسْتَغْفِرُاللّٰه ! येह कहने से शौहर का दिल दुखेगा और औ़रत अपना घर तुड़वा लेगी । इस के पास काग़ज़ की लिखी हुई सनद होगी लेकिन बा'ज़ अवक़ात शौहर के पास तजरिबा होता है अगर्चे वोह पढ़ा हुवा न हो । बहर ह़ाल इस त़रह़ किसी को बोलना सख़्त दिल आज़ारी का सबब हो सकता है । मैं अपने पास मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाने वाले इस्लामी भाइयों को देने के लिये रिसाला रखता हूं, बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता कि किसी को रिसाला देने लगता हूं तो दूसरा इस्लामी भाई बोलता है कि इन को उर्दू नहीं आती, मैं ने ऐसों को समझाया है कि इस त़रह़ न बोला करें क्यूं कि इस से सामने वाले का दिल दुख सकता है, हां अगर वोह ख़ुद बोल दे कि मुझे उर्दू नहीं आती तो अलग बात है । मैं ने ऐसे लोग भी देखे हैं जो बेहतरीन अंग्रेज़ी जानते हैं, आ़म पढ़ा लिखा शख़्स उन को देख कर ह़ैरान रह जाए लेकिन वोह उर्दू से ना आशना होते हैं । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 97)

शौहर को गाली देना कैसा ?

सुवाल : बीवी का अपने शौहर को मज़ाक़ में गाली निकालना कैसा ?

जवाब : गाली निकालने को ह़दीसे पाक में फ़िस्क़ (गुनाह) कहा गया है । (بخاری، 1/30، حدیث:48) अगर बीवी शौहर को गाली निकाले तो येह और भी सख़्त हो जाएगा क्यूं कि इस ने तो शौहर की ता'ज़ीम और इत़ाअ़त करनी है लिहाज़ा औ़रत शौहर को गाली निकालने पर तौबा करे, शौहर से मुआ़फ़ी मांगे और आयिन्दा ऐसा करने से बचे । (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 52)

सुवाल : बीवी को नमाज़ की त़रफ़ लाना हो तो कौन सा त़रीक़ा अपनाना

चाहिये ? नीज़ बीवी को गाली गलोच से रोकने का भी कोई ह़ल बता दीजिये । (SMS के ज़रीए सुवाल)

जवाब : बीवी को नरमी, प्यार और शफ़्क़त से नमाज़ की तल्क़ीन करनी चाहिये और नमाज़ पढ़ने के फ़ज़ाइल, नीज़ न पढ़ने की वईदें सुनानी चाहिएं । اَلْحَمْدُلِلّٰه ! दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब ''फ़ैज़ाने नमाज़'' मौजूद है, बीवी को बिठा कर इस से दर्स दें और घर में (बद अ़क़ीदगी, बे पर्दगी, म्यूज़िक और हर त़रह़ के ग़ैर शर्ई मुआ़मलात से पाक) इस्लामी चेनल चलाएं, इस त़रह़ बीवी का दिल नर्म पड़ेगा और वोह اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم नमाज़ी बन जाएगी । अगर शौहर शोर शराबा करता रहेगा तो बीवी को ज़िद चढ़ेगी और फिर मुश्किल है कि वोह नमाज़ी बने ।

जहां तक गाली गलोच का तअ़ल्लुक़ है तो मुसल्मान को गाली देना गुनाह का काम है । (بخاری، 4/111، حدیث:6044) शौहर और बीवी तो मुसल्मान होने के साथ साथ क़रीबी रिश्तेदार भी हैं और उन के सिलए रेह़मी के भी मुआ़मलात हैं । अगर शौहर बीवी को गाली देता है तो उसे चाहिये कि तौबा करे और मुआ़फ़ी भी मांगे, गाली गलोच तो वैसे भी अच्छे लोगों का काम नहीं है, जब कि बीवी तो रफ़ीक़ए ह़यात या'नी ज़िन्दगी की साथी है । अगर बीवी शौहर को गाली देती है तो येह और बड़ी बात है, क्यूं कि शौहर का उस पर बड़ा ह़क़ है, यूं शौहर को गाली देना और बड़ा जुर्म हो गया, ऐसी सूरत में बीवी को चाहिये कि तौबा करे और शौहर से मुआ़फ़ी भी मांगे । गाली गलोच गन्दे लोगों का काम है, गाली देने वाले से लोग भी नफ़रत करते हैं । बा'ज़ गाली देने वाले येह समझते हैं कि लोग उन्हें सलाम करते हैं, ह़ालां कि वोह सलाम इस लिये कर रहे होते हैं ताकि आप के शर से बचे रहें कि ''यार ! इस को मुंह कहां लगाएं !'' बस सलाम कर दिया और निकल गए । गाली देने वालों को तौबा करनी चाहिये और चूंकि गाली देने से सामने वाले

का दिल भी दुखता है, इस लिये जिन्हें गाली दी है उन से मुआ़फ़ी भी मांगें। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 230)

सुवाल : बद गुमानी में पड़ जाने और हुस्ने ज़न न रख पाने के अस्बाब बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : इस के मुख़्तलिफ़ अस्बाब होते हैं, जैसा कि इस बारे में दीनी मुत़ालए़ की कमी होना, माहोलियात का असर, बुरी सोह़बत, समझाने वालों की कमी और सब से बढ़ कर येह कि बद गुमानी से होने वाले नुक़्सानात की त़रफ़ तवज्जोह न होना, क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात बद गुमानी ख़ून ख़राबा भी करवा देती है या घर ही उजाड़ देती है, जैसे अगर शौहर बीवी से बद गुमानी करे या बीवी शौहर से बद गुमानी करे तो इस के नतीजे में दोनों एक दूसरे पर शक करेंगे और बात लड़ाई झगड़े बल्कि इस से भी आगे चली जाएगी और यूं पूरा घर तबाह हो सकता है। आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़तावा रज़विय्या में फ़रमाते हैं : बद गुमानी रिया से कम ह़राम नहीं है। (फ़तावा रज़विय्या, 5/323) हमें तो हर मुसल्मान के बारे में हुस्ने ज़न रखना चाहिये, मुसल्मान के हर अ़मल को अच्छे गुमान पर मह़मूल करना या'नी उस के बारे में अच्छा गुमान क़ाइम करना वाजिब है। (फ़तावा रज़विय्या, 5/324 माख़ूज़न) इसी त़रह़ बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी एक वाक़िआ़ है कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने एक शख़्स को चोरी करते हुए देख लिया तो फ़रमाया : क्या तू ने चोरी की है ? उस ने कहा : **अल्लाह** की क़सम ! मैं ने चोरी नहीं की, (ह़ालां कि आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी आंखों से उसे चोरी करते हुए देखा था। आप عَلَيْهِ السَّلَام पर ख़ौफ़े ख़ुदा का ग़लबा हुवा और) आप ने फ़रमाया : मैं मान लेता हूं, मेरी आंखों ने धोका खाया है। (بخاری، 2/458، حدیث:3444) हमें भी चाहिये कि दूसरे मुसल्मानों के लिये हुस्ने ज़न क़ाइम करें और बद गुमानी से बचें। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 122)

सुवाल : बा'ज़ लोग कहते हैं कि औ़रत को चांद की मुबारक बाद नहीं देनी चाहिये, क्या येह दुरुस्त है ? (सोशल मीडिया के ज़रीए सुवाल)

जवाब : अगर कोई मुक़द्दस महीना है जैसा कि हमारे यहां माहे जश्ने विलादत का चांद होता है तो रबीउ़ल अव्वल की मुबारक बाद देते हैं, अगर मुबारक बाद देने वाला महरम है तो मुबारक बाद दे सकता है जैसे भाई बहन को, बेटा मां को और शौहर बीवी को मुबारक बाद दे सकता है। (क़िस्त : 85)

सुवाल : क्या औ़रत इद्दत में इस्लामी चेनल देख सकती है ?

(SMS के ज़रीए सुवाल)

जवाब : औ़रत इद्दत में (बद अ़क़ीदगी, बे पर्दगी, म्यूज़िक और हर त़रह़ के ग़ैर शर्ई मुआ़मलात से पाक) इस्लामी चेनल देख सकती है। (मदनी मुज़ाकरे में शरीक मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया :) अगर औ़रत इद्दत में ज़िक्र कर्दा ख़ुसूसिय्यात वाला इस्लामी चेनल घर के अन्दर ही देखती है तो जिन सूरतों में दीगर इस्लामी बहनों को देखने की इजाज़त है तो उन्हीं सूरतों में येह भी देख सकती है। इसे देखने का इद्दत से यूं कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है कि इस की वज्ह से इद्दत में कोई फ़र्क़ पड़ता हो। इद्दत अस्ल में एक वक़्त का नाम है जो त़लाक़ या मौत की सूरत में शुरूअ़ हो जाता है। इद्दत में बुन्यादी त़ौर पर औ़रत पर दो हुक्म होते हैं : एक येह कि बिला ज़रूरते शर्ई घर से बाहर नहीं जा सकती। दूसरा येह कि ज़ीनत या'नी सिंघार, मेकअप वग़ैरा करना औ़रत के लिये मम्नूअ़ हो जाता है। (बहारे शरीअ़त, 2/242, 244 हिस्सा : 8 माख़ूज़न) (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 36)

शौहर ख़र्चा न दे तो बीवी क्या करे ?

सुवाल : अगर शौहर अख़राजात न दे तो बीवी को क्या करना चाहिये ?

(SMS के ज़रीए सुवाल)

जवाब : बीवी को नान, नफ़क़ा, और मकान देना शौहर पर वाजिब है, नहीं देगा तो गुनाहगार होगा। (جوہرۃ نیرۃ، 2/108) येह सब चीज़ें न देने की सूरत में बीवी मुक़द्दमा भी कर सकती है, क़ाज़ी उस को ख़र्चा दिलवाएगा। (बहारे शरीअ़त, 2/269, हिस्सा : 8) लेकिन अब ऐसा अन्दाज़ नहीं रहा। इस लिये ऐसी सूरत में आपस में मिल कर ख़ानदान वाले तै़ कर लें और तरकीब बना लें। Case (मुक़द्दमा) करेंगे तो घर बैठ जाएगा और सब मुश्किल हो जाएगा, साथ ही रुस्वाई और बदनामी भी होगी। शौहर को भी चाहिये कि अपनी बीवी के जाइज़ अख़्राजात जिन को पूरा करने का शरीअ़त ने कहा है उन्हें पूरा करे। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 88)

सुवाल : अगर शौहर तंगदस्त हो तो बीवी को क्या करना चाहिये ?

(निगराने शूरा का सुवाल)

जवाब : शौहर की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करे और तसल्ली दे कि आप फ़िक्र न करें। ऐसे मौक़अ़ पर फ़रमाइश न करे, क्यूं कि फ़रमाइश भी आज़्माइश में डाल देती है और बा'ज़ अवक़ात शौहर ह़राम की त़रफ़ रुख़ कर बैठता है। बीवी अगर शौहर को Freehand दे (या'नी फ़रमाइशें करने से बचेगी) तो शौहर को सुकून मिलेगा और वोह Tension free (ज़ेह्नी दबाव से फ़ारिग़) भी रहेगा, **अल्लाह** पाक करेगा कि बरकतें भी आ ही जाएंगी। अपने नसीब में जो रोज़ी हो वोह मिल कर रहती है। अ़वामी मुह़ावरा है : हर बहाने रोज़ी और हर बहाने मौत है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 66)

ज़ौजा के तर्के में शौहर का ह़िस्सा

सुवाल : अगर ज़ौजा फ़ौत हो जाए तो उस के माल में से शौहर को क्या मिलेगा ?

जवाब : ज़ौजा फ़ौत हो जाए तो उस के माल में से सब से पहले सुन्नत के मुत़ाबिक़ उस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन और तदफ़ीन का एहतिमाम किया जाए,

फिर इस के बा'द उस का क़र्ज़ हो तो वोह अदा किया जाए, फिर अगर उस ने कोई जाइज़ वसिय्यत की है तो उस के माल के तीसरे हिस्से से उस की वसिय्यत को पूरा किया जाए, फिर इस के बा'द जो माल बच जाए उस में से शौहर को हिस्सा मिलने की दो सूरतें हैं अगर ज़ौजा का बेटा बेटी या पोता पोती में से कोई न हो तो इस सूरत में शौहर को कुल माल का आधा मिलेगा और अगर ज़ौजा का बेटा बेटी या पोता पोती में से कोई हो तो इस सूरत में शौहर को कुल माल का चौथाई हिस्सा मिलेगा चुनान्चे पारह 4 सूरतुन्निसाअ की आयत नम्बर 12 में ख़ुदाए रह़मान का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَ لَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَ لَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَاۤ اَوْ دَيْنٍ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारी बीबियां जो छोड़ जाएं उस में से तुम्हें आधा है अगर उन की औलाद न हो फिर अगर उन की औलाद हो तो उन के तर्के में से तुम्हें चौथाई है जो वसिय्यत वोह कर गईं और दैन निकाल कर।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 17)

सुवाल : क्या शौहर को बीवी की हर ख़्वाहिश पूरी करना लाज़िमी है ?[1]

जवाब : क़ुरआने पाक में इर्शाद है : ﴿اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ﴾ (پ5، النساء:34) "**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** मर्द अफ़्सर हैं औ़रतों पर।" तो मर्द औ़रत पर ह़ाकिम है। लिहाज़ा औ़रत को मर्द की इत़ाअ़त और फ़रमां बरदारी करनी है। इस के बजाए अगर औ़रत चाहे कि शौहर मेरी माने और मेरा फ़रमां बरदार हो तो येह दुरुस्त नहीं। जाइज़ दरख़्वास्तें और फ़रमाइशें मसलन

1... येह सुवाल शो'बा फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा की त़रफ़ से क़ाइम किया गया है जब कि जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का अ़त़ा फ़रमूदा ही है। (शो'बा फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

त़रह़ त़रह़ के खानों, नित नए डीज़ाइन के कपड़ों वग़ैरा वग़ैरा की त़लब पूरी करना शौहर पर वाजिब नहीं। वाजिब सिर्फ़ नान नफ़क़ा वग़ैरा है अलबत्ता अगर शौहर दीगर फ़रमाइशें भी पूरी करता है तो येह बीवी पर एह़सान होगा। चूंकि येह सवाब का काम है लिहाज़ा शौहर को ह़त्तल इम्कान जाइज़ ख़्वाहिशात पूरी करनी चाहिएं। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 24)

नोट

जैल में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" से ग़ीबत की कुछ मिसालें नक़्ल की गई हैं जिन्हें मौज़ूअ़ की मुनासबत से यहां शामिल किया जा रहा है। येह बातें न सिर्फ़ मियां बीवी की दुन्यवी ज़िन्दगी में ज़ह्र घोल देती हैं बल्कि उन की उख़्वी ज़िन्दगी के लिये भी नुक़्सान और ख़सारे का बाइस हैं।

"ग़ीबत ना जाइज़ व ह़राम है" के सतरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से मयके जा कर सुसराल के मुतअ़ल्लिक़ की जाने वाली ग़ीबतों की 17 मिसालें

❀ सास हर वक़्त मुंह फुलाए रहती है ❀ बात बात में कीड़े निकालती है ❀ मेरा पकाना उसे पसन्द ही नहीं आता ❀ मेरी त़बीअ़त ख़राब हो तो सास कहती है बहाने बनाती है ❀ दूसरी बहू को बड़ा चाहती है मेरे साथ पराया सुलूक क्यूं करती है ❀ बड़ी अख्खड़ और सख़्त मिज़ाज है ❀ मुझ पे हर वक़्त अपना हुक्म चलाती रहती है ❀ शौहर को मेरे ख़िलाफ़ भड़काती है ❀ सास मुझ से काम बहुत करवाती है ख़ुद सारा दिन बिस्तर पर पड़ी रहती है ❀ मां बेटी मिल कर मेरी बुराइयां करती रहती हैं ❀ सास ने शौहर को मेरे ख़िलाफ़ कर दिया है अब ❀ मैं उन्हें सोना बन कर भी दिखाऊं वोह मुझे पाउं की जूती ही समझेंगे ❀ कई कई घन्टे उन

का इन्तिज़ार करती हूं आते ही मुंह फुला कर बैठ जाते हैं ❀ उन की कलमुखी त़लाक़न बहन की भी ख़िदमतें करनी पड़ती हैं ❀ मेरी फुलां त़लाक़न नन्द बड़ी मुंहफट है ❀ त़लाक़ ली मगर ज़ोर नहीं गया ❀ सुना है उस ने अपने मियां को एक दिन भी सुख नहीं दिया था आख़िर बेचारा त़लाक़ न देता तो क्या करता।

''मुसल्मान की आबरू रेज़ी ह़राम है'' के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से सुसराली रिश्तों की ग़ीबतों की 22 मिसालें

❀ मेरी बहन को उस की सास तंग करती है ❀ बहनोई घर का ख़र्च नहीं देता ❀ कमा कर सब मां को दे देता है ❀ दामाद मेरी बेटी पर जुल्म करता है ❀ अपनी मां की बातों में आ कर बार बार घर से निकाल देने की तड़ियां देता है ❀ मां के चढ़ाने पर बात बात पर मारता है ❀ त़लाक़ की धम्कियां देता है ❀ रात देर तक घर से बाहर रहता है ❀ दिन को देर तक सोता रहता है ❀ हड ह़राम है ❀ दूसरी औ़रत के चक्कर में है ❀ इस के दोस्त अच्छे नहीं हैं ❀ सुना है नशा वग़ैरा भी करता है ❀ हम को बहुत मन्हूस आदमी से पाला पड़ गया है ❀ एवईं (या'नी बस ऐसा ही) है ❀ ज़हरीला सांप है ❀ उस के दिल में दग़ा है ❀ उजड ❀ गंवार ❀ जाहिले मुत़्लक़ है ❀ बेटे की सास जादूगरनी है ❀ बहू ने ता'वीज़ गन्डे करवा कर मेरे बेटे को अपनी त़रफ़ कर लिया है इस लिये बेटा मेरी एक नहीं सुनता।

''ग़ीबत करने वाला बरोज़े क़ियामत कुत्ते की शक्ल में आएगा'' के सैंतीस हुरूफ़ की निस्बत से मंगनी या त़लाक़ होने पर की जाने वाली ग़ीबतों की 37 मिसालें

अगर मंगनी टूट जाए या त़लाक़ वाक़ेअ़ हो जाए तो अक्सर शैत़ान फ़रीक़ैन को कान पकड़ कर रिंग में लाता और वोह नाच नचाता है कि अल

अमान वल ह़फ़ीज़ !!! ग़ीबतों, तोह्मतों, इल्ज़ाम तराशियों, ऐ़ब दरियों, दिल आज़ारियों, बद गुमानियों और बद कलामियों का एक तूफ़ान खड़ा हो जाता है, हर ख़ूबी भी "ऐ़ब" बन कर रह जाती है ! हर फ़रीक़ अपने आप को "मज़्लूम" साबित करने के लिये एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर झूट बोलता है ह़ालां कि बरसों से घर चल रहा होता है मगर जब दो ख़ानदानों में "जंग" छिड़ती है तो फ़रीक़े मुक़ाबिल को مَعَاذَاللہ "बद अ़क़ीदा" तक कह दिया जाता है ! ऐसे मवाक़ेअ़ पर की जाने वाली ग़ीबतों की 37 मिसालें मुलाह़ज़ा हों :

लड़की वालों की त़रफ़ से ग़ीबतें : ❀ शराबी था ❀ जूआरी ❀ लुच्चा ❀ लफ़ंगा ❀ लोफ़र ❀ आवारा था ❀ 420 था ❀ कमाता नहीं था ❀ घर का ख़र्च नहीं देता था ❀ सब पैसे मां के हाथ में दे देता था ❀ उस ने कभी घर को घर नहीं समझा ❀ सास रोटी नहीं देती थी इस लिये लड़की पल्ले से खाती थी ❀ बहुत ज़ालिम लोगों से पाला पड़ा था ❀ फंस गए थे ❀ बड़ी मुश्किल से जान छूटी है ❀ हमारी लड़की को बे क़ुसूर मारता था ❀ हमारे सामने बहुत अकड़ता था ❀ उस का सारा ख़ानदान नीच है, हमारे मे'यार के लोग ही नहीं थे ❀ हमारी लड़की पर सोकन लाना चाहता था ❀ हमें जान से मारने की धम्कियां देने लगा था ❀ हमारी लड़की को बदनाम करना शुरूअ़ कर दिया था ❀ कमीने ने आख़िर अपनी ज़ात दिखाई ।

लड़के वालों की त़रफ़ से ग़ीबतें : ❀ लड़की का चाल चलन सह़ीह़ नहीं था ❀ बहुत सारे आशना बना रखे थे ❀ घर में ज़बान बहुत चलाती थी ❀ इस की मां ने खाना पकाना भी नहीं सिखाया था ❀ बरतन भी

मांझने नहीं आते थे ❀ कपड़े भी बराबर नहीं धो सकती थी ❀ बहुत झगड़ालू थी ❀ चोरियां करती थी ❀ ता'वीज़ गन्डे करवाती थी ❀ जादूगरनी थी ❀ चुड़ैल थी ❀ हमारे घर का सुकून बरबाद कर दिया था ❀ इस की मां घर आ कर हम को कोसनें दे गई थी ❀ हम को इस ने बदनाम कर दिया है ❀ हम ने ग़रीब समझ कर तर्स खाया था मगर इस का तो दिमाग़ आस्मान पर पहुंचा हुवा था वग़ैरा वग़ैरा।

घर की बात बाहर करने वाला कमज़ात है

अल्लाह पाक से हिदायते ख़ैर की दुआ है, यक़ीनन जो ग़ीबतें वग़ैरा करता है वोह बहुत ही बुरा बन्दा है। आइये ! आप को एक अच्छे बन्दे की हिकायत अ़र्ज़ करूं चुनान्चे एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक साहिबे राज़ (या'नी पेट के मज़बूत आदमी) का निकाह हुवा मगर दोनों के माबैन ज़ेहनी हम आहंगी का फ़ुक़्दान था (या'नी कमी थी) किसी त़रह़ उस के दोस्त को इस बात की भनक मिल गई, उस ने पूछा : तुम्हारे घर का क्या मस्अला है ? उस साहिबे राज़ ने जवाब दिया : मैं इतना कमज़ात नहीं कि घर की बात किसी को बता दूं ! बात आई गई हो गई। बिल आख़िर घर न चल सका और त़लाक़ देनी पड़ गई। जब उस के दोस्त को पता चला तो बोला : वोह तो अब तुम्हारी बीवी नहीं रही, बता दो क्या मुआ़मला था ? उस समझदार शख़्स ने जवाब दिया : अब तो वोह मेरे लिये ग़ैर औ़रत हो चुकी है और किसी ग़ैर औ़रत के मुतअ़ल्लिक़ मैं कैसे बात करूं !

अल्लाह हम को फ़ज़्ल से अ़क़्ले सलीम दे शर्मो ह़या तुफ़ैले रसूले करीम दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ज़ौजा को पानी पिलाने पर अज्र

हज़रते इ़रबाज़ बिन सारिया رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم को फ़रमाते हुए सुना : जब कोई शख़्स अपनी बीवी को पानी पिलाता है तो उसे उस का अज्र दिया जाता है। तो मैं अपनी बीवी के पास आया और उसे पानी पिलाया फिर उसे भी वोह ह़दीसे पाक सुनाई जो मैं ने **रसूलुल्लाह** صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم से सुनी थी।

(مجمع الزوائد، 3/300، حدیث:4659)